अध्याय 4

# संगीतज्ञों की जीवनियाँ एवं पूर्ण परिचय

## उ.अल्लारखा खाँ

अंतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त तबला–वादक अल्लारखा खाँ के नाम से प्रायः सभी तबला–प्रेमी परिचित हैं। आपका जन्म सन 1851 ई. में पंजाब के रतनगढ़ (गुरदासपुर) में हुआ। इनके पिता का नाम हाशिमअली था, जो खेतीबाड़ी का काम करते थे।

वैसे तो बाल्यकाल से ही अल्लारखा को संगीत से लगाव था; किन्तु पन्द्रह–सोलह वर्ष की आयु में आपने पठानकोट की एक नाटक कंपनी में नौकरी कर ली। वहाँ आप उस्ताद कादिरबख्श के शिष्य खाँ साहब लालमुहम्मद के सम्पर्क में आए और उन्हीं से तबले की शिक्षा लेना प्रारंभ कर दिया। कुछ दिनों के पश्चात् इन्हें अपने चचा के साथ लाहौर जाने का सुयोग प्राप्त हुआ, वहाँ आपने उस्ताद कादिरबख्श से तबले की उच्चस्तरीय शिक्षा प्राप्त की।

लाहौर और दिल्ली के आकाशवाणी–केन्द्रों से कुछ दिनों तक तबला–वादन प्रसारित करने के बाद 1937 ई. में अल्लारखा बम्बई चले गए। वहाँ भी आपने आकाशवाणी–केन्द्र में नौकरी कर ली। चार–पाँच वर्ष के पश्चात् आप फिल्म–क्षेत्र के संपर्क में आ गए और कुछ फिल्मों में संगीत–निर्देशन का कार्य भी किया।

अल्लारखा खाँ का तबला–वादन पंजाब–घराने की विशेशताओं से ओत–प्रोत है। बेमिसाल तैयारी और सफाई आपकी वादन–शैली के विशेश गुण हैं। तंत्रकार तथा गायकों की संगति करने में आपको विशेश महत्त्व प्राप्त है। आपके सुपुत्र ज़ाकिर हुसैन खाँ ने भी तबला–वादन के क्षेत्र में बहुत यश प्राप्त किया है।

## पं. कंठे महाराज

तबला–सम्राट पं. रामसहाय मिश्र के घराने से सम्बद्ध पं. कंठे महाराज भारतवर्ष के श्रेष्ठतम तबला–वादकों में गिने जाते थे। कंठे महाराज का जन्म सन् 1880 ई. के आस–पास बनारस में हुआ था। बाल्यकाल से ही आपकी शिक्षा पं. बल्देवसहाय मिश्र के द्वारा सम्पन्न हुई। तीन वर्ष शिक्षा देने के बाद बल्देवसहाय जी नेपाल चले गए। शिष्य से गुरू का वियोग सहन न हो सका, फलतः कंठे महाराज को भी नेपाल पहुँचना पड़ा और वहाँ जाकर पुनः चार वर्षों तक गुरू के सानिन्ध्य में कंठे महाराज ने तबले की उच्चस्तरीय शिक्षा प्राप्त की।

भारतवर्ष का प्रत्येक संगीत–प्रेमी पं. कंठे महाराज की तबला–वादन–कला से प्रभावित था। आपने देश में

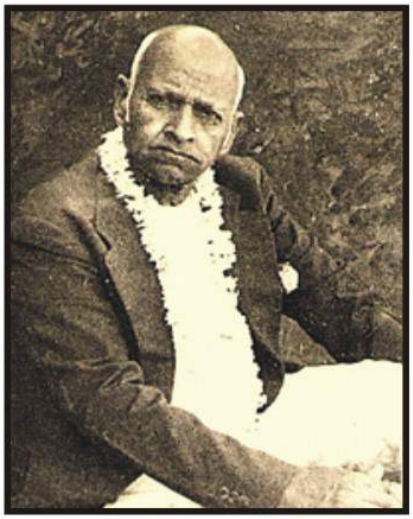

होने वाले विशाल संगीत –सम्मेलनों, आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों एवं समय–समय पर होने वाले अन्य सांस्कृतिक सम्मेलनों में तबला–वादन द्वारा जितनी ख्याति अर्जित की थी, उतनी ख्याति भारत के किसी विरले ही तबला–वादक ने प्राप्त की होगी।

बुजुर्ग और घरानेदार महारथी संगीतकारों के साथ वादन करने के लिए आपको ही आमंत्रित किया जाता था। दोनों तबलों को गिरफ्त में लेकर जब वे वीरासन की मुद्रा में बैठते थे तो देखते ही बनता था। बाएँ तबला पर आपका अद्‌भुत आधिपत्य था। कठिन ताल, विविध छंद, बनारस अंग की गत, परन और स्तुतियों का प्रदर्शन करने में आपका कोई जोड़ नहीं था। यदि कहा जाय कि कंठे महाराज बनारस परम्परा के साक्षात् प्रतीक थे तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

1 अगस्त 1968 को वाराणसी में ही आपका स्वर्गवास हो गया। पं. कंठे महाराज के प्रमुख शिष्यों में उनके पुत्र पं. किशन महाराज का नाम भारतवर्ष के श्रेष्ठ तबला–वादकों में गिना जाता है।

## सामता प्रसाद (गुदई महाराज)

बनारस के तबला–सम्राट 'प्रतप्पू महाराज' के घराने के तबला–वादकों में गुदई महाराज अपने समय के प्रसिद्ध तबला–वादक रहे है। आपका जन्म 18 जुलाई सन् 1920 ई. को काशी में हुआ था। आपकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही आपके पिता पं. वाचाप्रसाद मिश्र के द्वारा प्रारम्भ हुई। पं. बाचाप्रसाद मिश्र स्वयं तबले के कलाकार थे, अतः 7 वर्ष की आयु तक इनके द्वारा गुदई महाराज को व्यवस्थित ढंग से शिक्षा मिलती रही। पिताजी की मृत्यु के पश्चात् आपकी तालीम पं. बिक्कू जी मिश्र के द्वारा आगे बढ़ती रही। अत्यन्त रियाज और अथक परिश्रम द्वारा आपने इसमें अच्छी सफलता प्राप्त कर ली। सन् 1980 ई. में आपको भारत सरकार ने 'पद्मश्री' से विभूषित किया था।

आपके दो पुत्र हुए, कुमार और कैलाश। देश–विदेश में तो गुदई महाराज ने अपने वादन द्वारा तबला को सम्मान दिलाया ही, साथ ही फिल्म–क्षेत्र में भी आपने अच्छी ख्याति अर्जित की है। आपके उल्लेखनीय शिष्यों में – पं. सत्यनारायण वशिष्ठ (शैक्षणिक क्षेत्र) तथा पुत्र कुमारलाल (क्रियात्मक क्षेत्र) का नाम प्रमुख है।

## नाना पानसे (पखावज वादक)

ये इन्दौर के निवासी थे। किशोरावस्था में एक बार इन्हें कीर्तन–मण्डली में अपने पिताजी के साथ काशी जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहाँ इनकी भेंट एक राजपूत ब्राह्मण से हुई, जिसका नाम जोधसिंह था। देवालयों में रामचरितमानस का पाठ, भजन–कीर्तन आदि इस ब्राह्मण के जीविकोपार्जन के साधन थे। शेष

समय एकांत में पखावज–वादन में व्यतीत होता था। नाना साहब इस ब्राह्मण के पखावज–वादन को सुनकर बड़े प्रभावित हुए और उनके हृदय में इस कला को सीखने की प्रबल उत्कंठा जाग्रत हो गई। अपने पिताजी से विशेश आग्रह करके पानसे ने इस ब्राह्मण से पखावज–वादन की शिक्षा पाने की स्वीकृति प्राप्त कर ली और समस्त शक्तियों को केन्द्रित करके कला की आराधना में जुट गए। मौखिक शिक्षा के अतिरिक्त लगभग छह घंटे तक आप दैनिक क्रियात्मक अभ्यास किया करते थे। काशी में नाना साहब का यह क्रम लगभग बारह वर्ष तक अविरल गति से चला। तपस्या फलीभूत हुई और नाना साहब पानसे पखावज–वादन में पूणरूपेण दक्ष होकर अपने निवास–स्थान को लौट पड़े।

इन्दौर आने पर नाना साहब ने प्राप्त विद्या में अपनी बुद्धि के अनुसार अनेक आवश्यक संशोधन किए। गणित की दृश्टि से जिन परन और बोलों में कुछ न्यूनता रह गई थी, उन्हें शास्त्र–मर्यादानुसार शुद्ध किया। स्वयं भी बहुत से नवीन ठेकों, बोलों, टुकड़ों, परनों आदि की रचना की और उन्हें अपने शिष्य–वर्ग को सिखाया। नाना साहब उद्‌भट और अद्वितीय वादक होने के साथ–साथ उच्च कोटि के शिक्षक भी थे। इनका शिक्षा देने का ढ़ंग बड़ा सरल और सुबोध था, इसीलिए पानसे का शिष्य–सम्प्रदाय विशाल तथा विस्तृत है। पखावज के अतिरिक्त तबला–वादन और नृत्य–कला में भी प्रवीण थे। अपने कुछ शिष्यों को इन्होंने नृत्य की शिक्षा भी दी। निज़ाम–सरकार की इच्छानुसार वामनराव चांदवड़कर को आपने तबला की शिक्षा देकर प्रवीण कर दिया। अपने एक पुत्र तथा लड़की के पुत्र को भी आपने अपनी कला में पारंगत कर दिया था।

नाना साहब निरभिमानी और सरल स्वभाव के व्यक्ति होने के साथ–साथ बड़े संताषी जीव थे। आपको इन्दौर का राज्याश्रय प्राप्त था। योग्यतानुसार राज्यकोश से आपको बहुत कम वेतन मिलता था, इस पर भी उन्हें असंतोष न था। एक बार ग्वालियर–नरेश महाराज जयाजीराव इन्दौर आए। उन्होंने नाना साहब का पखावज–वादन सुना और अत्यंत प्रभावित हुए। इन्दौर–नरेश श्री तुकोजीराव होल्कर से उन्होंने नाना साहब को ग्वालियर ले जाने की मांग की। इन्दौर–नरेश ने यह प्रश्न नाना साहब की मर्ज़ी पर छोड़ दिया, परन्तु नाना साहब ने अधिकाधिक आर्थिक प्रलोभन होते हुए भी ग्वालियर जाने के लिए अपनी स्वीकृति नहीं दी। इस घटना से आपकी संतोषी प्रवृत्ति का प्रमाण मिलता है।

तत्कालीन विद्वजनों के मतानुसार नाना साहब पानसे–जैसा ताल–मर्मज्ञ, मधुर और तैयार वादक एवं ताल–शास्त्री कोई दूसरा नहीं हुआ। आपको ताल–शास्त्र का नायक कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। आपका 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इन्दौर नगर में ही निधन हो गया।

## कुदऊसिंह पखावजी

पखावज–वादकों में कुदऊसिंह का नाम आज भी बड़े सम्मान और श्रद्धा के साथ लिया जाता है। यह निर्विवाद सत्य है कि आप अपने समय के अद्वितीय पखावज–वादक हो गए हैं। आपका जन्म सन् 1815 ईस्वी के लगभग बांदा (उत्तर–प्रदेश) में हुआ था। पिता का नाम गप्पे या गुप्ते था। भवानी उर्फ श्री दास जी से आपने मृदंग की शिक्षा ग्रहण की थी।

उन दिनों उत्तर–भारत का प्रमुख नगर लखनऊ तथा मध्य भारत का प्रमुख नगर ग्वालियर संगीत के केन्द्र बने हुए थे। लखनऊ के शासक नवाब वाजिदअली शाह और ग्वालियर के महाराज जयाजीराब, दोनों ही

संगीत कला के अनन्य प्रेमी थे; इसी कारण उक्त दोनों नगरों में भारतीय संगीत भली–भांति फल–फूल रहा था। एक बार वाजिदअली साहब के दरबार में पखावज–वादन के संबंध में कुछ प्रतिस्पर्धा उत्पन्न हो गई। इस प्रतिस्पर्धा में विजय प्राप्त करने वाले को नवाब की ओर से एक हजार रुपए के पुरस्कार की घोषणा कर दी गई। कुदऊसिंह ने इस प्रतियोगिता में जोधसिंह नामक पखावजी को परास्त कर कीर्ति और संपत्ति, दोनों ही प्राप्त कीं। नवाब ने इन्हें 'कुंवरदास' की उपाधि से विभूषित किया।

निःसंदेह कुदऊसिंह का मृदंग–वादन इतना कोमल और गंभीर होता था कि स्वर का आविर्भाव होते ही गायक, वादक और श्रोता सभी तन्मय हो जाते थे। आपके विषय में अनेक किंवदंतियां प्रसिद्ध हैं कहते हैं कि नवाब रामपुर के यहां सुर–सिंगार–वादक हुसैन खां और कुदऊसिंह में अविस्मरणीय प्रतियोगिता हुई। द्रूतलय में प्रायः बारह घड़ी तक बजाते–बजाते जब हुसैन खां की अंगुलियां थककर विश्राम करने को विवश हुई तो नवाब ने एक साथ दोनों वाद्यों पर एक एक हाथ रख दिया। कुदऊसिंह शेष रातभर दुगुनी लय में मृदंग बजाते रहे। तानसेन के वंशज प्रसिद्ध सितार–वादक अमृतसेन से भी उनका मुकाबला हुआ था।

तत्पश्चात् श्री कुदऊसिंह ग्वालियर–दरबार में पहुंचे। वहां पहुचकर आपने बड़े गर्व के साथ महाराज के सम्मुख अपने सर्वश्रेष्ठ पखावज–वादक होने की घोषणा की और अपने लिए अविजित पत्र मांगा। परंतु दैव का नियम है कि घमंड एक–न–एक दिन अवश्य चूर होता है। परीक्षा के लिए ग्वालियर–दरबार के वृद्ध ध्रुवपद–गायक नारायण शास्त्री की संगति के लिए कुदऊसिंह बिठाए गए। ध्रुवपद शुरू हुआ, कई बार प्रयत्न करने पर भी कुदऊसिंह ठीक–ठीक सम की पहचान नहीं कर सके और इस प्रकार भरे दरबार में इनका गर्व चूर हो गया। तत्पश्चात महाराज जयाजीराव ने इनका वादन सुना। मीठा और असीमित तैयार हाथ, स्पष्ट और नियमबद्ध बाज सुनकर महाराज अत्यन्त प्रसन्न हुए और उन्होंने कुदऊसिंह को अपने दरबार में रख लिया।

कहते हैं कि सन् 1857 ई. के विद्रोह के समय आप दतिया चले गए थे। दतिया उस समय विद्रोहियों का आश्रय – स्थल था। कुदऊसिंह अंतिम दिनों तक दतिया में ही रहे। वहां उन्हें प्रतिदिन सात राजाशाही (चांदी का रुपया) दी जाती थीं। वे दानी भी थे। प्रसिद्ध है कि आप अपने शिष्यों के साथ तीन मोमबत्तियां जलाकर साधना किया करते थे। उन्होंने प्रायः एक हजार परणों का आविष्कार किया था।

कुदऊसिंह के बारे में एक किंवदंती भी चली आती है कि इनकी 'गजपरन' के परीक्षार्थ एक बार इनके ऊपर हाथी भी छोड़ा गया और परन बजाते ही वह हाथी भयभीत होकर भाग गया। इस कहावत से यही तथ्य प्राप्त होता है कि आप उस समय के बहुत श्रेष्ठ तथा प्रभावशाली वादक थे। ऐसा सामर्थ्यवान पखावज वादक भारतीय संगीत के इतिहास में कोई विरला ही निकलेगा। इनकी शिष्य–परंपरा सुदृढ़ और विशाल थी। कुदऊसिंह का व्यक्तित्व बेहद रोबीला था। वे ऊँचे पूरे गौर वर्ण के व्यक्ति थे। उनकी भुजाएं भी कुछ लंबी थीं। पीले रंग का अलफा, तहमद, बाघ–चर्म की टोपी, माथे पर सिंदूर के तीन आड़े तिलक, दाहिने हाथ पर लँगड़ी बुलबुल तथा दाहिने पैर में बंधी जंजीर उनके व्यक्तित्व की विशिष्टताएं थीं। आपका देहावसान 95 वर्ष की आयु में हुआ माना जाता है। आपकी शिष्य परंपरा में मऊ (आजमगढ़) के अद्वितीय मृदंग–वादक मदनमोहन 'सितारे–हिंद' और टीकमगढ़ के हरचरनलाल झल्ली का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

## अभ्यासार्थ प्रश्न

### अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

(1) नाना पानसे किस विधा के संगीतकार थे ?
(2) कण्ठे महाराज कौनसा वाद्य बजाते थे ?
(3) सामता प्रसाद का उपनाम क्या था ?
(4) अल्लारक्खा खाँ किस घराने के थे ?
(5) कुदऊ सिंह कौनसा वाद्य बजाते थे ?
(6) कण्ठे महाराज किस वाद्य को बजाते थे ?
(7) सामता प्रसाद का जन्म स्थान क्या है ?
(8) अल्लारक्खा खाँ किस वाद्य को बजाते थे ?
(9) नाना पानसे का जन्म स्थान कहाँ है ?
(10) कुदऊ सिंह का जन्म स्थान कहाँ है ?

### लघुत्तरात्मक प्रश्न

(1) अल्लारक्खा खाँ ने तबला वादन किससे सीखा ?
(2) कण्ठे महाराज के प्रमुख शिष्य कौन हैं ?
(3) नाना पानसे पखावज के अलावा और कौनसी संगीत विधा जानते थे ?
(4) कुदऊ सिंह के गुरू कौन थे ?
(5) कुदऊ सिंह की वादन शैली की प्रमुखता क्या थी ?

### निबंधात्मक प्रश्न

(1) पाठ्यक्रम में सम्मिलित कलाकारों का जीवन परिचय दीजिये ?
(2) पाठ्यक्रम में सम्मिलित कलाकारों की वादन शैली का वर्णन कीजिये ?
(3) पाठ्यक्रम में सम्मिलित कलाकारों की शिष्य परंपरा का वर्णन कीजिये ?

रूद्रवीणा